प्रथम अध्याय

उपेंद्रनाथ 'अश्क" - व्यक्तित्व - कृतित्व --

जीवन परिचय --

उपेंद्रनाथ 'अश्क" चतुर्मुखी प्रतिमा के स्वामी ही नहीं, बल्कि सिद्ध साहित्यकार भी हैं। उनकी प्रतिमा की प्रखरता एवं साहित्य की हर दिशा में उनका यश उल्लेखनीय है।

उपेंद्रनाथ अश्क का जन्म पंजाब प्रांत के प्रसिद्ध नगर `जालंधर` के पैतृक मकान में १४ दिसम्बर १९१० को हुआ। उनकी जन्म-पत्रिका में उनका लग्न मीन राशी वृषाभ, नक्षत्र कृतिका और जन्म नाम `इंद्रनारायण` है। इनके पिता ने उनका नाम `उपेंद्रनाथ` रखा। अपने लड़कपन के हीरो कवि `कश्मीरीलाल अश्क` की मृत्यु के बाद अपना पुराना उपनाम `शनावर` छोड `अश्क` नया नाम अपना लिया।`[१] ज्योतिष शास्त्र के अनुसार वे जो कुछ हैं, उनके जन्मकालिक बलाढय ग्रहों के कारण ही हैं। इलाहाबाद के निकट ही `नसरा` गाँव है। अश्क जी का अनुमान है, कि उनके पूर्वज यहीं से गये होंगे।

अश्क जी के पिता पं.माधोराम स्टेशन मास्टर थे। वे फक्कड,मनमौजी, पक्के शराबी-कबाबी,दरियादिल इन्सान थे, तो उनकी माँ बसंतीदेवी सीधी-सादी धर्म-परायणा,पतिव्रता महिला थी। `अश्क` अपने भाइयों में `दूसरे` हैं।

बचपन से ही अश्क जी का जीवन वैचित्र्यपूर्ण अनुभवों से भरपूर है। उनका

---

१ उपेंद्रनाथ अश्क (मेरे संस्करण) - आस्माँ और भी हैं - पृ.१७-१८।

शैशव घोर गरीबी में, अभाव में एवं कलहपूर्ण वातावरण में बीता, उन्होंने बचपन में न बचपन देखा, न युवावस्था में जवानी।'[१] अश्क जी की प्राथमिक शिक्षा जालंधर के साईदास एंग्लो संस्कृत हाईस्कूल की प्रायमरी शाखा में हुई। १९२१ में प्रायमरी स्कूल की अंतिम परीक्षा द्वितीय श्रेणी में उत्तीर्ण की आर उसी संस्था के हाईस्कूल में १९२७ को हाईस्कूल की परीक्षा द्वितीय श्रेणी में उत्तीर्ण हुए। इसके बाद जालंधर के डी.ए.वी.कालेज से बी.ए. की परीक्षा तृतीय श्रेणी में उत्तीर्ण की। उनकी इच्छा एम.ए. में दाखिल होने की, प्रथम श्रेणी प्राप्त करने की थी, परंतु आर्थिक विपन्नता के कारण वे एम.ए. उस समय न कर सके। पिता के 'घर फूँक तमाशा देख' या 'कौडी न रख कफन के लिए' जैसे नारों के कारण घर की दशा शोचनीय थी। अत: बी.ए.करते ही वे अध्यापक बन गये।

अश्क जी बचपन से ही अध्यापक, लेखक, संपादक, वक्ता, ऐक्टर, डायरेक्टर अथवा फिल्म में जाने के सपने देखा करते थे।'[२] अपने मनमौजी, फक्कड,अहंवादी स्वभाव के कारण अध्यापक जीवन के संकुचित एवं संकीर्ण घेरे से मुक्त हो, वे प्रसिद्ध उर्दू कवि श्री 'मेलाराम वफा' के साथ लाहौर चले गये और उर्दू दैनिक 'भीष्म' के संपादन विभाग में रहे। इस बीच सुप्रसिद्ध कथाकार श्री.सुदर्शन के प्रयास से लाला लजपतराय द्वारा संचालित उर्दू दैनिक 'वंदेमातरम्' में कथालेखक रहे। जून १९३३ में लाहौर के प्रसिद्ध वैद्य के लिए उन्होंने एक 'हिदायतनामा' लिखा।

इस बीच १९३२ में अश्क जी का विवाह शीलादेवी के साथ बस्तीगंजा में हुआ। परंतु लॉ खत्म करते ही अश्क जी के अथक प्रयासों के बावजूद ११ सितंबर १९३६ को शीलादेवी चिरनिद्रा में लीन हो गयी। भावप्रवण अश्क जी काफी उदास और गंभीर रहा करते थे उस समय।[२]

'वंदेमातरम्' में साहित्य सृजन के लिए वक्त मिलने की गुंजाइश होने के

---

१ उपेंद्रनाथ अश्क - परतों के आरपार - पृ.२३।

२ कौशल्या अश्क - नाटककार अश्क (सं) - पृ.४८७।

कारण उन्होंने वहाँ से त्यागपत्र दिया । बाद में `वीरभारत` में लग गये । फिर `वीरभारत` की नौकरी छोड `भूचाल` साप्ताहिक के संपादक हुए, परंतु उनकी स्वाभिमानी आत्मा असंतुष्ट रही और उन्होंने वहाँ से भी त्यागपत्र दे दिया । उसी वर्ष में वे सिमले में ट्यूशन पढाते रहे । वापसीपर आपने लाहौर लॉ कालेज में प्रवेश किया । तमाम कठिनाइयों के बावजूद उन्होंने १९३६ में अथक परिश्रम, सतत लगन एवं निष्ठा से डिस्टिंक्शन लेकर प्रथम श्रेणी प्राप्त की । पहली पत्नी की मृत्यु के बाद अश्क जी काफी उदास रहते थे । अत: वे वर्धा जाना चाहते थे । परंतु १९३६ में वे शांतिहेतु पंजाब के प्रसिद्ध एवं आदर्श गाँव `प्रीतिनगर` चले गये और `प्रीतलडी` के हिंदी-उर्दू संस्करणों के संपादक बन गये । परंतु एक स्कैण्डल से परेशान हो उन्होंने नौकरी ही छोड दी । उसी समय जून १९४१ में प्रसिद्ध उर्दू कथाकार कृष्णचंद्र के आग्रह से वे `हिंदी परामर्शदाता` तथा `नाटककार` के रूप में `ऑल इंडिया रेडिओ - दिल्ली` में तीन सालतक कार्यरत रहे । परंतु लेखक के अधिकारों की वजह से कुछ गहमागहमी के कारण उन्होंने वहाँ से भी त्यागपत्र दे दिया ।

उसके बाद `सैनिक समाचार` दिल्ली हिंदी संस्करण के संपादक हुए । फिर दिसम्बर १९४५ में फिल्मिस्तान के बुलानेपर वे बंबई गये । वहाँ उन्होंने `मजदूर और आठ दिन` में अभिनय भी किया । इस समय वे उपन्यास `गिरती दीवारें` तथा `कैद` नाटक लिख चुके थे । इस बीच १२ सितम्बर १९४१ में अश्क जी ने वर्तमान कौशल्या देवी के साथ शादी की । १९४५ में वे बेहतरीन संवाद लेखक माने जा रहे थे । `सफर` बॉक्स ऑफिस पर काफी सफल रही । परंतु फिल्म की अजब -सी अंधाधुंद, घुटन, ताकझाँकी एवं बनावट से ऊबकर वे दो साल के बाद फिर वापिस अपनी दुनिया में आ गये । इस बीच बंबई प्रवास में उन्होंने प्रसिद्ध एकांकी `तूफान से पहले` लिखा । कहानी `कैप्टन रशीद` लिखी और `कैद`, `उडान` के अंतिम स्वरूप तैयार किये । `गिरती दीवारें` का उर्दू अनुवाद भी किया । फिल्म से मुक्त होने ही वाले थे कि उन्हें यक्ष्मा ने ग्रास लिया । उनकी प्रिय पत्नी कौशल्या ने उन्हें `पंचगणी सैनेटोरियम` में दाखिल किया ।

आप इस बीच आर्थिक विपन्नता से विषण्ण थे । सन १९४८ से १९५३ तक अश्क दम्पति संघर्ष में रहे । कौशल्या जी ने यू.पी.तथा केन्द्र सरकार से ऋण लेकर `नीलाभ प्रकाशनगृह` की स्थापना की और अश्क की पुस्तकों को प्रकाशित करने की व्यवस्था की । इससे अश्क जी उत्साहित हो गये और तब से उनकी लेखनी आजतक अबाधित चल रही है ।

अपने जीवन में अश्क जी ने तीन विवाह किये हैं । वर्तमान कौशल्या जी के साथ उनका दाम्पत्य जीवन आनंदमय बीत रहा है। आज इलाहाबाद में अश्क जी का भरा-पूरा परिवार है, बीवी,बच्चे हैं, प्रपौत्र है, नौकर-चाकर है । परंतु साहित्य संघर्ष जारी है । अश्क अपने ८० वे वर्ष में भी काफी चुस्त एवं क्रियाशील हैं । अश्क अपने पूरे जीवन में विभिन्न अनुभवों से गुजरे हैं। समाचारपत्र के एक साधारण रिपोर्टर के रूप में जीवन संघर्ष प्रारंभ करके वे अध्यापक ,अनुवादक, संपादक, वक्ता, विज्ञापक, विशेषज्ञ, वकील, रेडिओ-नाटककार, फिल्म अभिनेता, संवाद-निर्देशक, सिनारिस्ट की हैसियत से तरह-तरह के अनुभव प्राप्त हुए हैं ।

हिंदी साहित्य में अश्क जैसा विवादास्पद और दिलचस्प व्यक्तित्व दूसरा नहीं है । दो अति सीमाओं के बीच पलनेवाले अश्कजी व्यक्तित्व की ट्रेजेडी यही है, कि उनमें अंतर्विरोध काफी हदतक हैं ।

`अश्क जी` एक बेतकल्लुफ इन्सान हैं । उनका चरित्र एक खुली हुई किताब है, आप पढ लीजिए, अच्छा लगे तो खुश,बुरा लगे तो भी खुश । उनकी उन्मुक्तता,उनका फक्कडपन बनावटी नहीं । कृष्णचंद्र ने कहा है ....`अश्क के मिजाज में बेकार की साहबीयत और अहंकार नहीं, जो अक्सर साहित्यकारों में पाया जाता है ।` [१] कौशल्याजी ने लिखा है कि `अश्क जी कपडों के मामले में बडे बेपरवाह हैं ।` [२]

---

१ कौशल्या अश्क - अश्क - एक रंगीन व्यक्तित्व - पृ.५६ ।

२ कौशल्या अश्क - दो धारा - पृ.१४ ।

भैरवप्रसाद गुप्त का कथन है --

`अश्क` एक नायक की तरह पूरा जीवन जिये हैं। उनके जीवन और व्यक्तित्व की सबसे बड़ी विशेषता यह नायकत्व ही है।`

चंचलता उनके व्यक्तित्व की पहचान है। अश्क जी अपनी स्पष्टवादिता और अपने निजी सिध्दान्तों के कारण शत्रु को नियंत्रण देते थे। अश्क जी की स्पष्टवादिता और अपने निजी सिध्दान्तों के कारण शत्रु को निमंत्रण देते थे। अश्क जी की स्पष्टवादिता ने शत्रुओं की संख्या बढ़ा दी है।

`सादगी कहिए इसे या होशियारी जानिए,

उनसे कह देते हैं, सब, जो कुछ हमारे दिल में है।`[१]

अश्क जी जिद्दी एवं क्रोधी भी कम नहीं है। उनके इस स्वभाव को देखकर कौशल्याजी लिखती हैं --

`चाणाक्य का उत्तराधिकारी यदि कोई है तो अश्क जी अपने आपको ही मानते हैं।`[२]

अश्क जी का प्रकृति प्रेम बहुत ही गहरा एवं अनुपम है। मानवेतर प्राकृतिक सौन्दर्य उनको एक नयी दुनिया में ला खड़ा करता है। अश्क जी स्वयं महत्वाकांक्षी और घोर आत्मविश्वासी व्यक्ति हैं।`[3] वे महत्त्वाकांक्षी भी हैं, उतने ही आत्म - प्रशंसक भी। उनमें आत्मश्लाघा भी कम नही। वे कहते हैं --` इतनी उम्र कहानी लिखने, पढ़ने और समझने में बिता देने के बाद मैं समझता हूँ, कि मुझे फतवा देने का अधिकार है।`[४]

हँसना - हँसाना तो कोई अश्क जी से सीखें। उनका हास्य जितना खुला है, उतना उनका व्यंग्य भी गहरा है। हास्य और व्यंग्य के अश्क उस्ताद हैं। बिना हास्यव्यंग्य के अश्क अधूरे हैं।`[५]

---

१ कृष्णचंद्र (सं.कौशल्या अश्क) अश्क - एक रंगीन व्यक्तित्व - पृ.१०९।

२ कौशल्या अश्क - शिकायतें और शिकायतें - पृ.३०।

३ अश्क हिंदी कहानी - एक अंतरंग परिचय - पृ.७६।

४ - वही - पृ.७६।

५ भैरवप्रसाद गुप्त - पत्थर - अल-पत्थर (भूमिका) - पृ.२८।

अश्क जी अभिमानी नहीं, स्वाभिमानी हैं । उनका कहना है कि अपने अधिकार के लिए लड़ना मेरी आदत है । मरते मरते भी मैं इससे चूक नहीं सकता ।'[1]

अश्क जी जिंदादिली के प्रतीक हैं । उनकी जिंदादिली में उनकी लेटेन्ट विल (Latent Will) का कम हाथ नहीं है, जो उनको पूर्वजीवन के संघर्षों से मिली है । भैरवप्रसाद गुप्त ने ठीक ही कहा है - 'जब भी कभी मैं अश्क की बात सोचता हूँ, मेरे सामने थकन को अपने भीतर समेटता और गर्द को बारबार उड़ाता कारवाँ गुजरने लगता है और मैं सोचता हूँ - कारवाँ के व्यक्तित्व को अपनी अकेली हस्ती में समाये इस व्यक्ति का चित्रण करने के लिए चेखोव की जरूरत है ।'[2]

साहित्यिक परिचय --

उपेंद्रनाथ अश्क जी एक सफल कवि हैं, सिध्द नाटककार ,जनप्रिय उपन्यासकार, कथाकार,संस्मरणाकार,आलोचक । अश्क जी संपूर्ण रूप से साहित्यकार अश्क हैं । अश्क जी की सफलता उनके परिश्रम के कारण है, किसी चमत्कार के कारण नहीं । परिश्रम अश्कजी की सफलता का रहस्य है । इसके चरित्र में वह ढीलापन, वह आलस्य, वह निरर्थक दंभ नहीं है, जो हिंदी साहित्य की चारित्रिक विशेषता है । दूसरों के दुख से दुखी और विचलित होने के सिवाय अश्कजी का कोई दुसरा दुख नहीं है । अश्क जी अंधेरे में परिश्रम नहीं करते ।

अश्क जी ने साहित्य - सृजन को अपना एकांगी धर्म माना है और इसके प्रति वे एकनिष्ठ भाव से ईमानदार रहे हैं । मन व आत्मा की महानता ही व्यक्तित्व की विशालता है । इस माने में वे एक उदाहरण हैं ।

अश्कजी के साहित्य सर्जना के पीछे व्यक्ति और समाज का यथार्थ चित्रण, जन कल्याण की भावना, स्वयं के सुखदुख को पाठकों से बाँटने की प्रेरणा ही साहित्य सर्जना का उद्देश्य है । अश्कजी कृति को श्रमसाधना से सक्षम बनाने के पक्षपाती हैं । और ऐसा करते भी हैं । 'अपनी कृतियों को बार-बार काटना, छाँटना, संशोधित

---

१ भैरवप्रसाद गुप्त - पत्थर - अल - पत्थर (भूमिका) - पृ.७२ ।

२ - वही -

परिवर्धित करते रहना, अश्कजी की लेखन प्रक्रिया का एक अभिन्न पहलू है । इसी कारण उन्हें एक आलोचक ने व्यंग्य से ` संशोधनवादी ` की संज्ञा दी है और मैं समझता हूँ कि साहित्यिक सफलता में उनके इस ` संशोधनवाद ` का बहुत बडा हाथ है । `[1]

अश्कजी का कथन है --

" बिना जिंदगी के यथार्थ को जानेबिना अपनी मिट्टी अपनी धरती और अपने परिवेश को पहचाने, उन शिखरोंपर पहुँचना कठिन है, तो हमने जिंदगी की उन घाटियों को जहाँ रहते थे, देखा,नापा और उनका चित्रण किया । `[2]

अश्क जी जिंदगी में आदर्शवादी है और लेखन में यथार्थवादी । इसलिए हिंदी कथा-साहित्य में यथार्थवादी सामाजिक स्तर,मनोवैज्ञानिक व्यापकता एवं गहराई लाने में अश्कजी पूर्णत: सफल हुए है । उनके साहित्य मे काल्पनिकता एवं झूठी रचनात्मकता का अभाव है । समूचा अश्क साहित्य मुख्यत: निम्नमध्यवर्गपर ही आधारित है ।

उनकी साहित्यिक सफलता उनके अथक परिश्रम, लगन,निष्ठा एवं अनवरत साधना की प्रतीक है । अश्कजी एक जागरूक,सचेतन कलाकार है । अपनी महत् इच्छा - शक्ति एवं साहित्यिक ललक से उन्होंने साहित्य क्षेत्र में अपने विविध अनुभवों तथा अनुभूतियों को पिरो दिया । उनका कृतित्व ` सचेतन एवं साधनामूलक ` है । अश्क जी की गति शीलता उनकी साहित्य साधना की प्राण है ।

अश्क जी को समय समयपर केन्द्र तथा राज्य सरकारों ने पुरस्कृत कर सम्मानित किया है । उन की लगभग एक दर्जन पुस्तकें पुरस्कृत हो चुकी है, जिन में ` साहब को जुकाम है `, ` चरवाहे `, ` शहर में घूमता आईना `, ` हिंदी कहानियाँ और फैशन `, सडकों पे ढले साये `, ` सत्तर श्रेष्ठ कहानियाँ `, ` कहानी लेखिका और जेहलम के सात पुल ` , ` पत्थर - अलपत्थर `, ` शिकायतें और शिकायतें `, `बडी-बडी आँखें `, उल्लेखनीय है । १९६१ में संगीत नाटक अकादमी ` के रूप में अश्क जी

---

१ उदयन वर्मा - (सं.कौशल्या अश्क) [illegible] पृ. १२७ ।

२ अश्क - हिंदी कहानी - एक अंतरंग परिचय - पृ.३५१ ।

पुरस्कृत हुए । १९७२ में नेहरू पुरस्कार से सम्मानित उन्हें सम्मानित किया गया और रूस जाने का भी निमंत्रण मिला ।

उनकी कई रचनाएँ भारतीय तथा विदेश भाषाओं में अनूदित हो चुकी है, जिनमें गिरती दीवारें के संक्षिप्त संस्करण चेतन तथा नाटक अलग - अलग रास्ते के रूसी जनता ने यथेष्ट स्वागत किया और वह अनेक बार मास्को टेलिविजनपर प्रस्तुत किया जा चुका है ।

अश्क जी १९५२ में प्रगतिशील लेखक संघ के प्रयाग अधिवेशन के स्वागताध्यक्ष बने । १९५६ में कालीदास जयंती समारोह में भाग लेने के रूस चले गये । भारत सरकार के आमंत्रणपर अश्क जी १९५८ में आंध्र प्रदेश गये । इस प्रकार अश्क एक सफल साहित्यकार हैं । वे साहित्य क्षेत्र में काफी सहिष्णु हैं । उनकी सबसे बडी विशेषता यह है कि, किसी भी कृति का मूल्यांकन करते समय बिना पक्षपात के सही निर्णय देते है । सहिष्णुता और असहिष्णुता के बीच उनका एक व्यक्तित्व घोर ईमानदार पाठक का भी है ।

अश्क जी ने साहित्य को चुनौती के रूप में स्वीकारा है । डॉ.रामविलास शर्माजी ने कहा है कि -- हिंदी साहित्य की छिछालेदर का नाम ही अश्क है । उनकी लेखनी साहित्य के अनेक विधाओं पर चली है । जैसे कहानी,नाटक,उपन्यास, निबंध, लेख,कविता,आलोचना,संस्करण,एकांकी इ. ।

नाटक क्षेत्र में १९३७ से लेकर उन्होंने जितनी कृतियाँ संपूर्ण नाटक और एकांकी के रूप में लिखी है, वे सब प्राय: अपने लेखनकाल के उपरांत उसी क्रम में प्रकाशित हुई हैं ।

नाटक --

जय - पराजय	(१९३७)	पैंतरे	(१९५२)
स्वर्ग की झलक	(१९३८)	अलग-अलग रास्ते	(१९४४-५३)
छठा बेटा	(१९४०)	आदर्श और यथार्थ	(१९५४)
कैद	(१९४५-)	अंजोदीदी	(१९५३-५४)
उडान	(१९४३-४५)		

एकांकी --

पापी (१९३८)
पहेली (१९३९)
लक्ष्मी का स्वागत (१९३९)
आपस का समझौता (१९३९)
जौंक (१९३८)
विवाह के दिन (१९४०)
पहेली (१९३९)
देवताओं की छाया मे (१९४०)
वेश्या (१९३८)
खिड़की (१९४०)
अधिकार का रक्षक (१९३८)
सूखी डाली (१९४०)
चमत्कार (१९४०)
नया पुराना (१९४१)
बहनें (१९४२)
कामदा (१९४२)
मैमूना (१९४२)
चिलम (१९४२)
चुम्बक (१९४२)
तौलिये (१९४३)
भँवर (१९४३)
आदिमार्ग (१९४३)
पक्का गाना (१९४४)
तूफान से पहले (१९४६)
कइसा साब कइसी आया (१९४६)
अंधी गली के आठ एकांकी (१९४९)
पर्दा उठाओ पर्दा गिराओ(१९५०)
बतासिया (१९५०)
कस्बे के क्रिकेट क्लब का उद्घाटन (१९५०)
मस्केबाजों का स्वर्ग (१९५०)
साहब को जुकाम है १९५४-६० के एकांकी ।

उपन्यास --

सितारों के खेल (१९३७)
गिरती दीवारें (१९४७)
गर्म राख (१९५२)
पत्थर-अलपत्थर (१९५७)
बड़ी-बड़ी आँखें (१९५४)

कहानियाँ --

१९३२ से १९३६ के रचनाकाल में `अंकुर`, `नासुर`, `चट्टान`, `ढाची`, `पिंजरा`, `गोखिरु`, `बैंगन का पौधा`, `मेम्ने`, `वालिये`, `कालेसाहब`, `बच्चे` `उबाल`, `कैप्टन रशीद` आदि अश्कजी की प्रतिनिधि कहानियाँ हैं ।

काव्यग्रंथ --

प्रात: प्रदीप (१९३७) ऊर्मियाँ (१९३८ से १९४१)

बरगद की बेटी (१९४९) दीप जलेगा (१९५०)

चांदनी रात और अजगर (१९५२)

सड़कों पे ढले साये (१९५३ से १९६०)

खोया हुआ प्रभामंडल (१९६१ से १९६९)

एक दृश्य नदी (१९६३)

संस्मरण - `मंटो मेरा दुश्मन(१९५६) निबंध

लेखपत्र, डायरी और विचारग्रंथ` ज्यादा अपनी कम परायी` (१९५०)

`रेखाएँ और चित्र`(१९५८)

अनुवाद --

ऐंटन चेखोव के लघु उपन्यास का अनुवाद` ये आदमी ये चूहे ` (१९५०) स्टीन बैंक के प्रसिद्द उपन्यास -` आफ माइस एण्ड मेन` का` हिज एक्सेलेन्सी(१९५०) अमर कथाकार दोस्ताव्हस्की के लघु उपन्यास` डर्टी स्टोरी ` का हिंदी अनुवाद ।

संपादन -

`प्रतिनिधि एकांकी ` (१९५०)` रंग एकांकी` (१९५६) संकेत (१९५६)

उपेंद्रनाथ अश्क की कृतियाँ अपनी अलग ही खासियत के कारण ऊँची कामयाबी को छू गयी हैं । साहित्यिक चुनौती ही इनका जीवन है, ध्येय है । उनका साहित्य ही आदि है, मध्य है और अंत भी है ।